चन्दामामा

माँ–बच्चों का मासिक पत्र

मुन्नी के पास बहुत से खिलौने थे। उसकी अलमारी में हमेशा खिलौनों का दरबार लगा रहता था। उसके पास कलकत्ते और बम्बई के, अपने मुल्क और विलायत के, जापान और चीन के तरह तरह के खिलौने थे। उसके पास चन्दन और काँच के, सेल्यूलाइड और प्लास्टिक के, रबर और काँसे-पीतल के तरह तरह की धातुओं से बने खिलौने थे। उसके पास देवी-देवताओं की मूर्तियाँ थीं। चिड़ियों और जानवरों की मूर्तियाँ थीं। उसकी अलमारी में दस दराज़ थे। बीच के दराज़ों में सब जानवरों की मूरतें थीं।

मुन्नी की माँ हर त्यौहार को कुछ न कुछ पकवान और मिठाई बनाती। मुन्नी को पकवान बहुत पसन्द थे। इसलिए जो कुछ मिलता तुरन्त निगल नहीं जाती। अपने हिस्से में कुछ खाकर और कुछ दूसरे दिन के लिए बचा कर अपने खिलौनों की अलमारी के जानवरों वाले दराज़ में छिपा देती।

एक रात इसी तरह कुछ मिठाई छिपाकर मुन्नी सो गई। दराज़ में जानवर भी सो गए थे। लेकिन वे एक घण्टे में जग उठे। जागने पर उन्होंने देखा कि मुन्नी रानी की मिठाई गायब हो गई है।

यह बात सबसे पहले मालूम हुई कठ-घोड़े को। उसने काँच के गधे से कहा-"यह कैसा अन्धेर है भैया ! ज़रा देखो न मुन्नी रानी की मिठाई किसी ने चुरा ली है !"

"क्या कहा ? मिठाई किसी ने चुरा ली ! भैया ! मैं तो बिलकुल नहीं जानता। मैं इतना कमीना नहीं हूँ कि मुन्नी रानी की मिठाई चुरा लूँ ! मेरा तो घास-फूस से ही पेट भर जाता है।" गधे ने जवाब दिया।

"क्यों बिल्ली ! तुम कुछ जानती हो इसके बारे में?" घोड़े ने पूछा। "मैं मुन्नी

शशिलोचन शर्मा

छुई तक नहीं। फिर मुन्नी रानी की मिठाई ?"

"मृगराज ! कहिए आपने तो...." यों कहते कहते सब जानवरों ने शेर की तरफ देखा। "कितने बेवकूफ हो तुम लोग ? मुझे जब भूख लगेगी तो मैं हाथी का मगज चीर-फाड़ कर खा न जाऊँगा ? क्या मैं इतना निकम्मा हूँ जो मुन्नी रानी की मिठाई चुरा लूँ ?" शेर ने गरज कर कहा।

"हनुमान जी के सुप्रसिद्ध वंश में जन्म लेकर मैं चोरी करूँगा ?" बन्दर ने दीन-भाव से पूछा।

"हनुमान जी के मित्र जाम्बवान के वंश में जन्म लेकर मैं क्यों चोरी करूँगा ?" रीछ ने कहा।

इस तरह सबने साफ इनकार कर दिया। तब घोड़े ने गधे से कहा-"भैया ! चोर तो कहीं बाहर से नहीं आया होगा। वह हमीं लोगों में से कोई होगा। अब उसे पकड़ने के लिए कोई तदबीर सोच निकालो !" गधे ने कहा-"भई ! मैं ठहरा गधा। मुझमें इतनी अक्ल कहाँ ? अगर हम में से किसी में वह सामर्थ्य है तो वह है सियार मामू में !"

की मिठाई क्यों चुराऊँगा ? हाय ! भगवान ! हाँ, अगर दूध-मलाई होती तो बात अलग होती !"कपड़े की बिल्ली ने जवाब दिया। तब रबर का चूहा जो यह सब बातें सुन रहा था, तैश में आगे आकर बोला-"मालूम नहीं, कौन वह नीच है जिसने मुन्नी रानी की मिठाई चुरा ली है। अगर मुझे उसका पता चल जाय तो अभी गला घोंट दूँ !"

रूई के खरगोश को मिट्टी के भेड़िए पर शक हुआ। यह जान कर भेड़िए ने कहा-"यह तो सच है कि मुझे भूख ज्यादा लगती है। लेकिन कसम खाकर कहता हूँ कि मैंने यह मिठाई

"मैं भी तो किसी आसमान से नहीं उतरा ? लेकिन हाँ, तुम चाहते हो तो चोर को पकड़ा दूँगा !" सियार ने यह सुन कर कहा।

"वाह ! वाह ! सियार मामा !" यह सुन कर सब जानवरों ने कहा।

"अच्छा! तो तुम सब पीठ फेर कर आँखें बन्द कर लो !" सियार ने हुक्म दिया। फौरन सब जानवरों ने ऐसा ही किया।

झट सियार ने वहीं रखी हुई चन्दन की कटोरी में अपनी पूँछ डुबो दी और चुपचाप खड़ा हो गया जैसे कुछ जानता ही न हो। "अच्छा! अब तुम सब इधर घूम जाओ ! और एक एक करके आकर मेरी पूँछ छू लो ! मैं बता दूँगा कि चोर कौन है !" सियार ने बाकी जानवरों से कहा।

"वाह ! कैसी अच्छी तदबीर सोच निकाली सियार मामू ने !" जानवरों ने सोचा। घोड़ा, गधा, शेर, हाथी, बन्दर आदि जानवर जब एक एक कर आए और सियार की दुम छू कर चले गए।

"सब लोगों ने छू ली ?" सियार ने पूछा। "हाँ !" सब जानवर एक खर में बोले। "चोर का पता लग गया ?" एक ने पूछा।

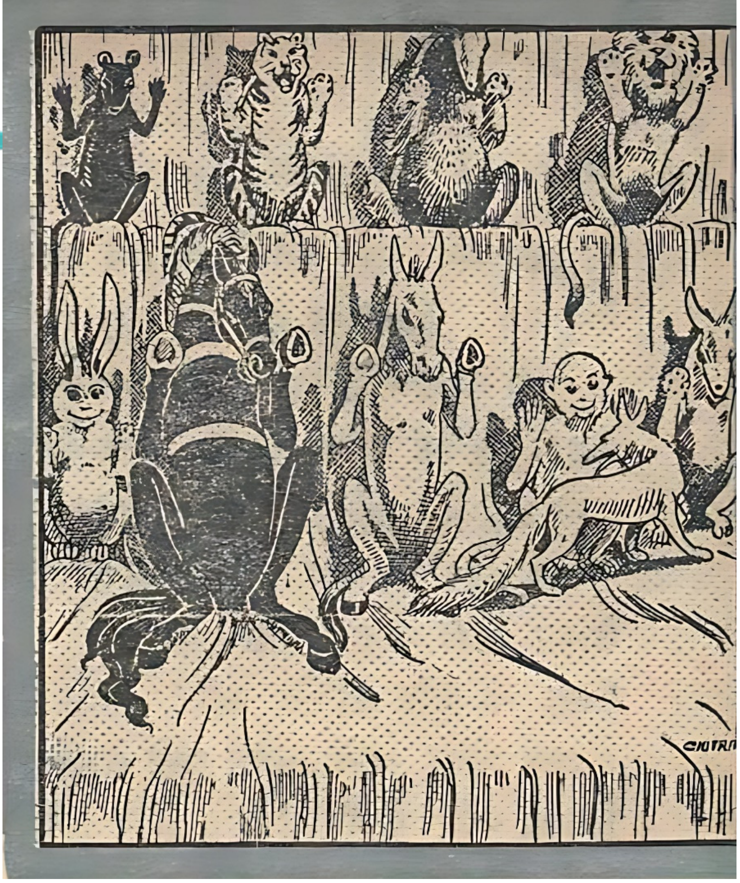

"भई ! ज़रा ठहरो ! एक एक करके आओ और अपना हाथ मुझे दिखा कर चले जाओ !" सियार बोला। तब सब जानवर एक एक करके आए और सियार को अपना हाथ दिखा कर चले गए। "हाथों में क्या रखा है ?" सब ने सोचा और अपना अपना हाथ गौर से जाँचने लगे।

"यह क्या ? हमारे हाथ पीले कैसे हो गए ? कैसी खुशबू आती है ?" जानवरों ने अचरज से कहा। सियार ने एक एक जानवर का हाथ देखा और जिस जिस के हाथ में चन्दन लगा था उसको बेकसूर कह कर बरी कर दिया।

इस तरह सब जानवरों के हाथ उसने देख लिए। सिर्फ एक चूहा बच रहा।

चूहा भी आया और हाथ दिखा कर भागना चाहता था कि सियार ने आँखें लाल-पीली करके कहा- "ठहरो! तुम्हीं चोर हो !"

यह सुन कर चूहा बगलें झाँकने लगा। लेकिन बिल्ली ने राह रोक कर कहा-"जरा भी हिले तो खैर नहीं ! समझे !" तब घोड़ा आगे आकर गुस्से से हिनहिनाया और बोला-"तो तुम्हीं ने चुराई मुन्नी रानी की मिठाई?" "हाँ, हाँ ! लेकिन मुझे मारो नहीं !" चूहे ने डर से थर-थर काँपते हुए कबूल कर लिया।

"वाह ! कैसा खाँग रचा तू ने ? और बोलता था कि चोर का गला घोंट दूँगा ?" बन्दर ने नज़दीक आकर गुस्से से कहा और उसकी दुम को पकड़ कर काट लेना चाहा। तब शेर ने उसे रोक कर कहा-"ठहरो! मृगराज मैं हूँ। मैं इसे दण्ड दूँगा।"

यह कह कर उसने सियार की तरफ घूम कर पूछा-"मेरे योग्य मन्त्री ! तुम्हें कैसे पता चला कि यही चोर है ?"

तब सियार ने हँस कर कहा-"हुजूर ! मैंने एक चालाकी की। मैंने कहा न था कि सब लोग मेरी पूँछ छू लेंगे तो मैं चोर का पता लगा लूँगा ? यह सुन कर इस चूहे ने डर के मारे मेरी पूँछ छुई ही नहीं ! इसी से सब के हाथ में चन्दन लगा, पर इसके हाथ में नहीं लगा। झट मैंने जान लिया कि यही चोर है ।

सियार की बुद्धिमानी से शेर बहुत खुश हुआ । उसके बाद उसने बिल्ली से कहा-"बिल्ली ! इस चूहे ने मुन्नी रानी को क्या धोखा दिया है, हम सब को धोखा दिया है। अब इसे यहाँ रहने का कोई हक नहीं। इसे ऊपर ले जाओ और वहाँ से उस गहरे बिल में ढकेल दो!" बिल्ली ने वैसा ही किया। चूहे को तब से अन्धेरे बिल में रहना पड़ा।

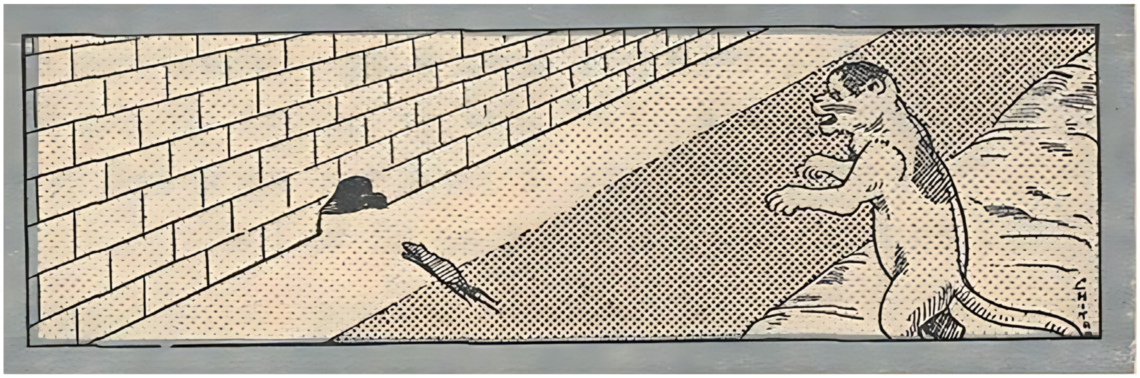

जब से जुड़वें भाइयों ने जान लिया कि उनके अञ्जन और भस्म वगैरह पाताल-गृह में काम नहीं करते तब से वे खूब माथा-पच्ची करने लगे। बहुत देर तक सोचने के बाद उन्हें एक सन्देह हुआ। उन्होंने कहा-"यह राक्षस सारे संसार में चक्कर लगा कर जुड़वों को ढूँढ़ कर पकड़ लेता है। फिर इसने इतने दिन तक हमें क्यों छुआ तक नहीं ? इसका क्या कारण रहा होगा ?"

दूसरे दिन राजकुमारियों से मिलने पर उदय ने अपने मन का सन्देह उन पर प्रगट किया तो उन्हें भी अचरज हुआ। सुभाषिणी ने कहा-"सच तो है ! हमें यह बात इतने दिनों से क्यों नहीं सूझी ? शायद एक वजह से वह तुम्हारे पास फटका नहीं होगा। फिर भी " यों कहती कहती सुभाषिणी चुप हो गई।

"क्या बात है ? बोलो न ! अगर तुम्हारा सोचना ठीक होगा तो हम भी आगे से होशियार रहेंगे।" निशीथ ने उससे कहा।

"कुछ नहीं; जिनके किसी अङ्ग में कोई दाग होता है वे जुड़वें राक्षस की बलि के काम में नहीं आ सकते। इसलिए वह उन्हीं जुड़वों को पकड़ लाता है, जिनके अङ्गों में कोई दाग न हो। लेकिन हमें तुम्हारे अङ्गों में कोई दाग नहीं नजर आता। इसलिए यह सवाल करने में सङ्कोच हुआ।" सुभाषिणी ने कहा।

इतना सुनते ही तीनों जुड़वें भाई एक साथ बोल उठे-"तुम्हारा अनुमान ठीक ही था।"

तब उदय ने बताया कि जन्म से ही उनकी दृष्टि में कुछ दोष था और वह दाढ़ी बाले बौने की कृपा से दूर हो गया। उसने उन्हें सारा किस्सा सुना दिया।

वे यों बातें कर ही रहे थे कि राक्षस के आने की सूचना देते हुए बवण्डर चलने लगा। झट राजकुमारियाँ सरोवर में कूद पड़ीं। लेकिन बेचारे जुड़वाँ भाई इस बार बच नहीं सके।उदय ने जेब से बुकनी निकाल कर अपने ऊपर छिड़कनी चाही कि इतने में राक्षस आ गया और उसने तीनों को अपनी मुठ्ठी में पकड़ कर उठा लिया।

तीनों भाई मन में तो डर से काँप रहे थे। लेकिन ऊपर से उन्होंने बड़ी बहादुरी दिखाई।

तब राक्षस ने गरज कर पूछा-"तुम लोग कौन हो ? किसकी इजाजत लेकर यहाँ आए हो ? जानते हो, पहले यहाँ जो लोग आए उनका क्या हाल हुआ ? सच सच बताओ!"

तब उदय ने कहा-"सच ही बताऊँगा। हम लोग जब आए तब हमें पता नहीं था कि यहाँ आने के लिए किसी की इजाज़त लेनी पड़ती है। हम लोग बहुत मुसीबतें झेल कर यहाँ आए हैं। इसलिए आप

पहले हमारी बात सुन लीजिए ! पीछे आपके मन जो आए सो कीजिएगा।"

"वाह रे छोकरे ! छोटे मुँह बड़ी बात ! मेरे भाई को चकमे में डाल रखा तुम्हीं लोगों ने ? अच्छा, पहले बताओ ! तुम लोग चोरी चोरी यहाँ क्यों आ घुसे हो ?" राक्षस ने गरज कर पूछा।

"यही तो गलती हो गई। लेकिन हम लोग चोरी चोरी नहीं आए। हमें चोरी चोरी आने की क्या ज़रूरत ? हम तो आए हैं काम पर ...." यों उदय और भी कुछ कहने जा रहा था कि इतने में पीछे से सुनाई दिया-"काम और क्या खाक होगा ? यही मुझे चकमा देना ही ?" इतना सुनते ही जुड़वें भाइयों ने पीछे फिर कर देखा। तुरन्त उन्हें वह राक्षस दिखाई दिया, जिसे उन्होंने धोखा देकर दाढ़ी वाले बौने के पास भेजा था। वह लम्बे कदम रखते हुए उनकी तरफ़ आ रहा था।

उसने आते ही कहा-"भैया ! इनकी खबर मैं लूँगा। तुम अपना वक्त खराब मत करो। जाओ !"

भाई के मुँह से इतना सुनते ही राक्षस ने सोचा-"किस्सा तो लम्बा-

चौड़ा मालूम होता है ! ये मेरे भाई के जाने-पहचाने लगते हैं। इसलिए इनको उसी के जिम्मे छोड़ देना अच्छा है।" यह सोच कर वह राक्षस गिद्ध का रूप धारण कर उड़ गया।

उसके जाने के बाद उसके भाई ने जुड़वाँ भाइयों को ले जाकर महल में बिठाया और कहा-"लड़को ! तुमने दाढ़ी वाले बौने को धोखा दिया। मुझे धोखा दिया। अभी तुमने मेरे भैया को भी धोखा देने की कोशिश की। लेकिन तुम लोगों की एक न चली। तुम लोग पकड़े गए। अब तुम लोगों ने दाढ़ी वाले के पास से जो जो अञ्जन, भस्म वगैरह चकमा देकर उड़ा लिए थे,

सभी यहाँ रख दो। पीछे फुरसत से बातचीत होती रहेगी।"

अब बेचारे जुड़वाँ भाई क्या करते ? लाचार होकर उन्होंने अञ्जन, भस्म वगैरह निकाल कर राक्षस के सामने रख दिए। तब राक्षस ने कहा- "लड़को ! मैं इतने दिनों से यहाँ पहरा दे रहा हूँ। लेकिन कोई मुझसे बच कर अन्दर न घुस सका। जितने लोग आए सब मेरी मुठ्ठी में फँस कर पत्थर की मूरतें बन गए। लो, देखो वे सब पत्थर की मूरतें ! लेकिन तुम लोगों ने मुझे झाँसा दे दिया। सच पूछो तो उस दिन से मेरे लिए खाना-पीना हराम हो गया है। अभी मैं भूख से परेशान हो रहा हूँ। आज महीने भर की भूख एक ही बार मिटाऊँगा। तुम्हारी कृपा से खूब डट कर खाऊँगा।" यह कह कर उसने जादू का तौलिया नीचे बिछाया और तरह तरह की खाने-पीने की चीजें माँगीं।

अपना पेट भरने के बाद राक्षस ने जुड़वें भाइयों को भी कुछ फल खाने को दिए। जब वे फल खा चुके तो राक्षस ने उन तीनों को एक रस्सी से बाँध दिया और कहा-"तुम लोग यहीं रहो। मैं ज़रा पीछे फुरसत से पानी पीकर आता हूँ।" यह कह कर वह सरोवर की तरफ़ गया।

थोड़ी देर बाद राक्षस तीन दोनों में पानी भर कर लौट आया। उसने वे दोने जुड़वें भाइयों को दिए।

भाइयों ने समझा कि राक्षस को अब उन पर उतना गुस्सा नहीं रहा। उन्होंने वह पानी उठा कर पी लिया। लेकिन पानी गले से उतरते ही बेचारे तीनों पत्थर की मूरतें बन गए।

यह देख कर राक्षस "हा हा ! ही ही!" कह कर खिलखिलाते हुए हँसने लगा। उसकी हँसी से वह सारा महल गुञ्जने लगा।

फिर उसने तीनों मूरतें उठा कर दरवाजे की बगल में खड़ी कर दीं।

यहाँ जुड़वें भाई तीनों राक्षस के चंगुल में फँस गए। अब चलो, ज़रा उधर चल कर देखें कि राजा और रानी का क्या हाल है ?

* * * * *

अपनी लड़कियों को खोजने के लिए जुड़वें भाइयों को भेजने के बाद उसी दिन राजा ने और एक काम किया। उसने किले की सबसे ऊँची मीनार पर एक ऊँचा कमरा बनवा लिया। उस कमरे में बैठ कर देखने से आस-पास कहाँ क्या हो रहा है, यह सब साफ़ मालूम हो जाता था। वह कमरा इतनी ऊँचाई पर था। अब राजा चौबीसों घण्टे उस कमरे में बैठ कर अपनी लड़कियों के लौटने की राह देखने लगा। इसको छोड़ कर उसे और कोई काम बाकी नहीं रह गया था।

तब तक जुड़वाँ भाइयों को गए पाँच साल बीत चुके थे। लेकिन अब तक उनका कोई पता न था। राजा के मन की बेचैनी रोज़ रोज़ बढ़ने लगी थी। लेकिन अब भी सारी आशा नहीं छूटी थी। इसलिए वह ज्योतिषी से

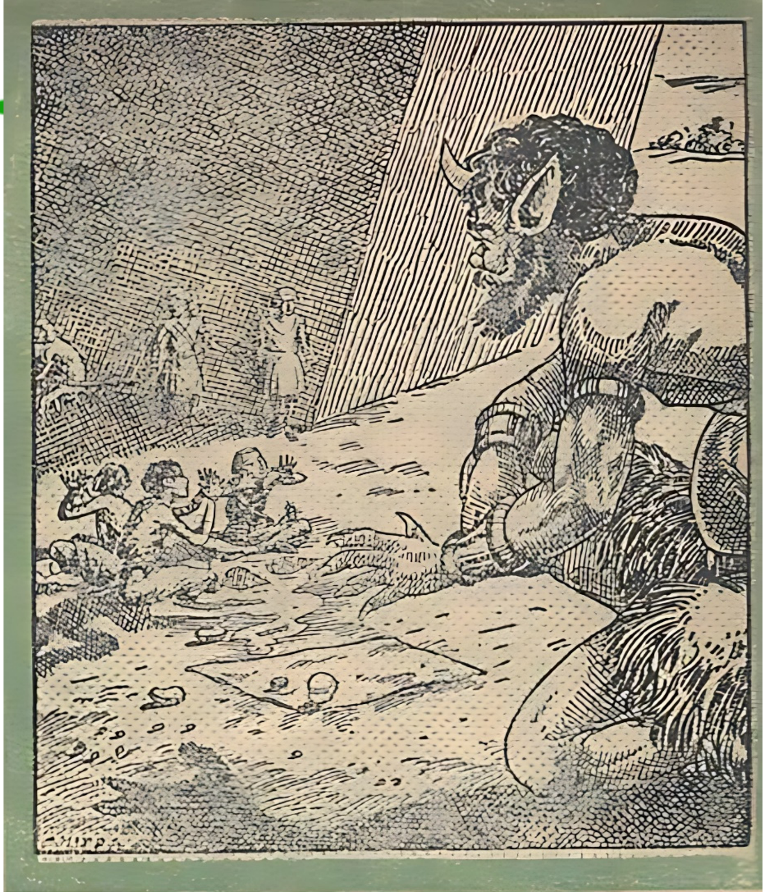

बार बार सलाह-मशवरा करता रहता था। "बिटियों का बाल भी बाँका नहीं हुआ है। वे जहाँ भी हों सुख से होंगी। वे ज़रूर सकुशल लौटेंगी। निराश होने की कोई ज़रूरत नहीं।" ज्योतिषी बार बार राजा को धीरज बँधाते थे। इसलिए राजा के प्राण अधरों पर अटके हुए थे।

एक रोज़ झुटपुटी अँधेरी में राजा अपने कमरे में बैठे हुए थे। उस मुँह-अँधेरे में राजा को दो सवार घोड़े दौड़ाते हुए महल की ओर आते दिखाई दिए। वे घोड़े किसके थे ? उन पर कौन सवार थे? यह सब राजा को मालूम नहीं था। लेकिन उन घोड़ों पर

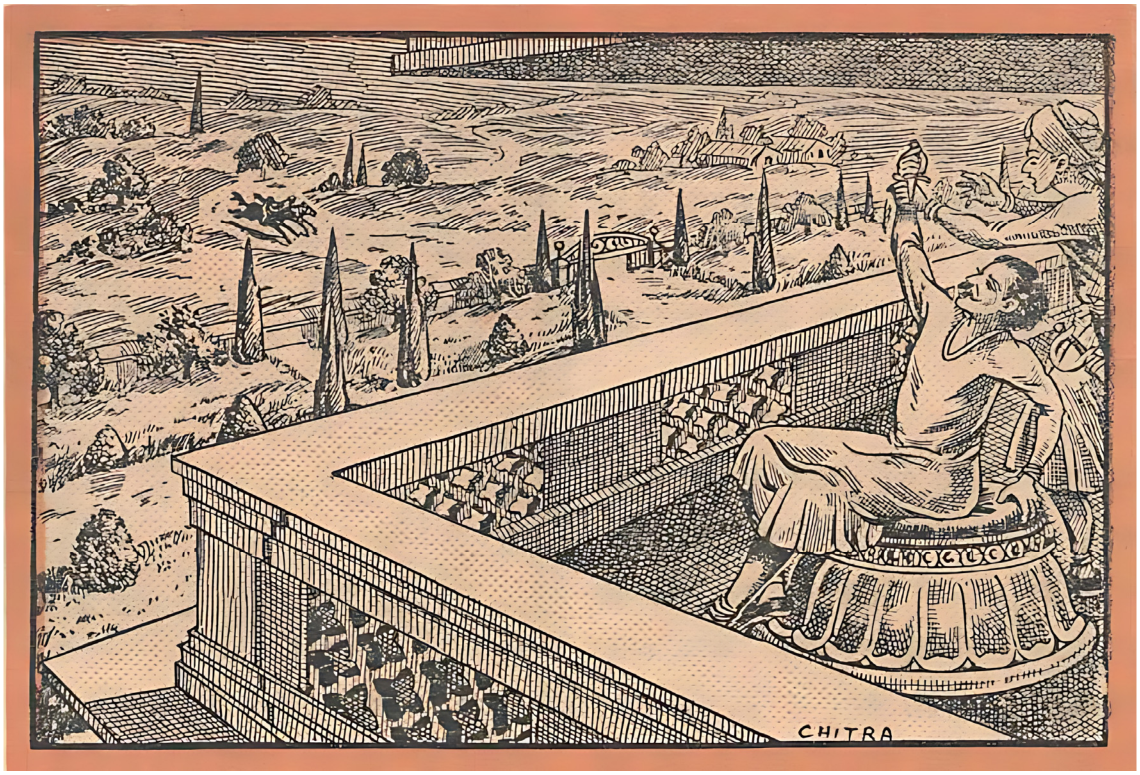

बँधे हुए काले झण्डे देखते ही उसके मुँह से एक चीख निकल गई। झट उसने कटार निकाल कर छाती में भोंक लेनी चाही। लेकिन संयोग से उसकी चीख सुन कर पहले ही नौकर वहाँ पहुँच गए थे। इसलिए राजा की जान तो बच गई। लेकिन वे गश खाकर गिर पड़े।

थोड़ी देर बाद जब राजा को होश आया तो दोनों घुड़सवार महल तक पहुँच गए थे।

उन घोड़ों को देखते ही राजा ने पहचान लिया कि ये वे ही घोड़े हैं जिन्हें उसने जुड़वें भाइयों को दिए थे। लेकिन उन पर जो सवार थे, वे जुड़वें भाई नहीं थे। वे उसी के नौकर थे।

राजा ने उतावली से पूछा-"क्या बात है ? मेरी लड़कियों का कुछ पता चला कि नहीं ? जुड़वें भाई कहाँ हैं ? ये घोड़े तुमको कहाँ मिल गए ?" उसने सवालों की झड़ी लगा दी।

तब उन नौकरों ने कहा-"महाराज ! माफ कीजिए ! हमें तो न आपकी लड़कियों

का पता चला और न जुड़वें भाइयों का। हम गाँव-गाँव में उन्हें खोजते हुए जा रहे थे कि एक जगह मैदान में ये घोड़े दिखाई पड़े। देखते ही हम पहचान गए और जुड़वें भाइयों और राजकुमारियों की खोज में वह सारी जगह छान मारी। लेकिन कहीं पता न चला। तब हमने सोचा कि शायद अब तक वे घर पहुँच गए हों। फिर आपको यह खबर भी सुनानी थी। इसलिए इन घोड़ों को लेकर हम लौट आए।" उन नौकरों ने निवेदन किया।

यह सब सुन कर राजा ने कहा-"हाय रे तकदीर !" बस, वह मुँह छिपा कर पड़ा रहा।

लोगों के बहुत कुछ समझाने के बाद राजा के मन को ज़रा दिलासा हुआ। तब उसने उन दोनों नौकरों को बुला भेजा और कहा-"अरे निकम्मो ! तुम लोग लड़कियों का पता लगाए बिना क्यों लौट आए ? तुमने सोचा तक नहीं कि जुड़वें भाई कहाँ किस दुर्दशा में हैं ? न जाने, वे किस आफत में फँस गए हैं ? नहीं तो, अब तक क्यों न लौट आते ? तुम लोग फौरन जाकर उन्हें खोजो। मेरा जी ऊब गया है। तुम लोग कब तक लौटोगे, मालूम नहीं। कौन जाने, तुम लोगों के लौटने तक मेरी जान बची रहेगी कि नहीं ? जाओ ! जल्दी काम पूरा करके लौट आना !" यह कह कर उसने उन्हें भेज दिया।

इन नौकरों के आने की खबर धीरे धीरे सारे महल में फैल गई और रानी का, जिसे अब ज़रा आराम था, पागलपन अब और भी बढ़ गया।

[वहाँ बेचारे जुड़वें भाइयों का क्या हाल था ? क्या वे मूरत ही बने रह गए ? राजकुमारियों को उन पर आए हुए सङ्कट की बात मालूम हुई कि नहीं ? आदि बातें अगले अङ्क में पढ़िए !]

किसी गाँव में विक्रम नाम का एक गरीब नौजवान रहता था। जब उस गाँव में उसके लिए जीविका चलाना मुश्किल हो गया तो वह शहर गया और चौक में खड़ा होकर आने-जाने वालों से पूछने लगा-"आपको नौकर चाहिए क्या ?" लेकिन सब लोग कहते चले जाते थे-"नहीं चाहिए ! नहीं चाहिए!"

जब साँझ हो गई तो एक सौदागर जो भड़कीले रेशमी कपड़े पहने हुए था, उधर आ निकला। उसके कपड़े देखने से ही पता चल जाता था कि वह बड़ा अमीर आदमी है। लेकिन उसका मुँह उल्लू जैसा था। इसलिए विक्रम ने उससे नहीं पूछा कि उसे नौकर चाहिए कि नहीं। लेकिन उस सौदागर ने स्वयं विक्रम को बुलाया और कहा-"ऐ नौजवान ! मुझे एक नौकर चाहिए। मैं हर रोज दस रुपए और वेतन दूँगा। करोगे यह नौकरी?" विक्रम ने सोचा-"मुझे और क्या चाहिए ?" और उसके पीछे पीछे चला।

सौदागर विक्रम को बन्दरगाह पर ले जाकर, उसे अपने जहाज़ पर चढ़ा कर, अपने देश ले गया। वह देश एक टापू था और उसके बीच सङ्गमरमर का महल बना हुआ था। वह महल बड़ा शानदार था। उसकी दीवारें सोने की थीं और खम्भे चाँदी के थे ! विक्रम ने डरते डरते सौदागर के पीछे पीछे उस महल में प्रवेश किया। अन्दर जाने पर उसे सोलह साल की एक परम सुन्दर लड़की दिखाई दी। उस लड़की का मुँह कुन्दन की तरह दमक रहा था।

उस लड़की की सुन्दरता देख कर विक्रम यों ही मुँह बाए खड़ा रह गया। विक्रम भी बड़ा खूबसूरत जवान था।

प्रकाश कौल

इसलिए उस को देख कर उस लड़की को भी खुशी हुई। लेकिन न जाने क्यों, उसके चेहरे पर उदासी और दया भी झलकने लगी। विक्रम ने यह देख तो लिया, लेकिन इसका कारण उसकी समझ में न आया।

उल्लूराम सौदागर ने रात को विक्रम को खिला-पिला कर कहा-"तुम जरा जल्दी सो जाओ ! क्योंकि हमें तड़के उठ कर एक जगह जाना है।" यह कह कर उसने सोने का कमरा दिखा दिया और आप भी सोने चला गया। उसके जाते ही उस लड़की ने, जिसे विक्रम ने महल में कदम रखते ही देखा था, चुपके से उसके नजदीक आकर हाथ में एक पुर्जी और एक शीशी रख दी और चली गई। विक्रम ने जब चकित होकर वह पुर्जी खोल कर देखी तो उस में लिखा था-"यदि तुम पर कोई सङ्कट आए तो तुम इस शीशी का ढ़कना खोल देना !" विक्रम ने शीशी टेंट में खोंस ली और सो गया।

तड़के ही उल्लूराम ने आकर विक्रम को जगाया और अपने साथ चलने को कहा। बाहर जाकर उसने एक घोड़े पर कुछ खाली बोरे लाद लिए

और विक्रम को उस घोड़े का रास पकड़ कर पीछे पीछे चलने को कहा। इस तरह वे दोनों घोड़े को साथ लेकर एक पहाड़ पर चढ़ने लगे। थोड़ी दूर जाने पर उन्हें एक बड़ी चट्टान दिखाई दी। वह चट्टान देखने में एक चौकोर पेटी की तरह लगती थी। "इस चट्टान पर चढ़ने पर तुम्हें एक कुआँ दिखाई देगा। उस कुएँ में सोने की ईंटें हैं। उन्हीं के लिए हम आए हैं।" उल्लूराम ने विक्रम से कहा। इतना कह कर उसने अपनी जेब से दो बोतलें निकालीं। एक बड़ी थी और

एक छोटी। दोनों में शरबत भरा था। उसने बड़ी बोतल विक्रम को दी और छोटी खुद लेकर पी गया। विक्रम को उसकी उदारता देख कर बड़ी प्रसन्नता हुई। उसने बड़ी बोतल का शरबत दो घूँट में पी डाला। तुरन्त उसकी आँखें मुँद गई और वह बेहोश हो गया।

झटपट उल्लूराम ने घोड़े पर लदा हुआ एक बोरा लिया और विक्रम को उस में बन्द कर दिया । उसने अन्दर एक छुरा भी रख दिया था। फिर वह उस बोरे को वहीं छोड़ कर खुद घोड़े के साथ थोड़ी दूर गया और खड़ा हो गया।

तुरन्त पहाड़ पर से एक कौओं का झुण्ड उड़ता हुआ उधर आ गया। उन कौओं की चोञ्चें लोहे की थीं और पङ्ख इस्पात के थे। वे उस बोरे को, जिस में विक्रम बन्द था, उठा कर ले गए और उस सोने के कुएँ में डाल कर अपनी चोञ्चों से मारने लगे।

तब तक बोरे में विक्रम को होश आ गया था। "मैं इस बोरे में कैसे आ गया ? ये कौन पञ्छी मुझे चोञ्चों से मार रहे हैं ?" यह कह कर उसने छुरे से बोरे को चीर डाला और बाहर आ गया। उसको छुरा हाथ में लेकर बाहर आते देख कौए भाग गए।

अब विक्रम खड़ा खड़ा सोचने लगा कि बाहर जाने की तदबीर क्या है ? इतने में उसे उल्लूराम की आवाज सुनाई दी-"अगर तुम सोने की ईंट उठा कर बाहर फेंक दो तो मैं तुम्हें बाहर निकाल लूँगा।"

तब विक्रम ने एक एक करके बहुत सी ईंटें बाहर फेंक दी। उल्लूराम ने सब को चुन कर बोरों में बन्द करके घोड़े पर लाद लिया और "बस, और

नहीं चाहिए !" कह कर घोड़े पर चढ़ गया और चलता बना।

विक्रम उसके जाने की बात ताड़ कर चिल्लाया-"अजी ! मुझे बाहर निकालो न ?" लेकिन उल्लूराम ने खिलखिला कर जवाब दिया-"उस कुँए में देखो ! तुम्हें निन्नानबे हड्डियों के पञ्जर दिखाई देंगे। गिन लेना और समझ लेना कि तुम्हारे जरिए सौ की संख्या पूरी हो जाएगी।" यह कह कर वह चला गया। पीछे फिर कर देखा भी नहीं।

"कैसा दुष्ट है यह ! इसीलिए मुझे रोज़ दस रुपए देने का वादा किया था !" यह सोच कर विक्रम चारों ओर ताकने लगा। इतने में फिर चारों ओर से कौए घेरने लगे। "दो-तीन दिन में मैं भूख-प्यास से अधमरा हो जाऊँगा। तब ये कौए मुझे नोच नोच कर खा जाएँगे।" उसने सोचा और उसका दिल दहल उठा।

इतने में उसे उस लड़की की दी हुई शीशी की बात याद आ गई। झट उसने उसे बाहर निकाला और ढकना खोला।

बस, धमाके की आवाज़ हुई और धुएँ का एक बवण्डर सा उठा। एक विकराल भूत उसके सामने आ खड़ा हुआ। "रे मनुष्य ! मुझे एक बड़े मुनि ने गुस्से में आकर शाप दे दिया और इस शीशी में बन्द कर दिया। मुझे हज़ारों सालों से इस तङ्ग शीशी में रहना पड़ा। आज तुम्हारी कृपा से मुझे छुटकारा मिला। इसलिए बोलो, तुम क्या चाहते हो ? तुम्हारी इच्छा पूरी करके मैं चला जाऊँगा।" उस भूत ने कहा। "अगर ऐसा है तो, मुझे इस मौत के कुए से बाहर निकाल दो !" विक्रम ने कहा। बस, पलक झपकते भूत ने उसे बाहर निकाल कर शहर के चौक में ले जाकर खड़ा कर दिया।

तब विक्रम ने एक जगह जाकर वेष बदल लिया और दाढ़ी-मूँछ लगा ली। फिर चौक में जाकर खड़ा हो गया और पूछने लगा-"नौकर चाहिए क्या ?"

कुछ दिन बाद उल्लूराम फिर नौकर की तलाश में उसी राह से आया। उसने बिना पहचाने विक्रम को फिर नौकर बना लिया। पहले की तरह ही वह फिर विक्रम को जहाज़ पर चढ़ा कर, टापू पर अपने सोने के महल में ले गया। रात को दोनों महल में सो गए। तड़के वह फिर विक्रम को पहाड़ पर ले गया।

लेकिन इस बार विक्रम ने अपनी चालाकी से बोतलों का शरबत बदल दिया था जिससे उसके बदले इस बार उल्लूराम ही बेहोशी की दवा वाला शरबत पीकर बेहोश हो गया। तुरन्त विक्रम ने उसे बोरे में बन्द कर दिया और कौओं ने उसे उठा ले जाकर सोने के कुँए में डाल दिया। जब कौए चोञ्च मारने लगे तो उल्लूराम को होश आया। वह "हाय बाप !" कह कर चिल्लाने लगा। तब विक्रम ने उसे अपना सच्चा परिचय दिया और कहा -"जल्दी से सोने की ईंटें उठा कर बाहर फेंक दो। नहीं तो तुम्हें यहीं छोड़ जाऊँगा।"

उल्लूराम ने सोने की ईंटें उठा कर बाहर फेंक दीं। विक्रम ने बोरे भर लिए और घोड़े पर लाद कर चलने लगा। जब उल्लूराम ने गिड़गिड़ा कर कहा कि मुझे भी बाहर निकाल कर अपने साथ ले चलो, तो विक्रम ने जवाब दिया-"नहीं, तुम यहीं रहो। वहाँ आकर तुम क्या करोगे ? अगर तुम चाहो तो कौओं के ज़रिए खाना भेजवा दूँगा। बस, जब जब मैं चाहूँगा, तब तब सोने की ईंटें बाहर फेंकते रहोगे।" यह कह कर वह चलता बना। महल में जाकर उसने उस लड़की से ब्याह कर लिया और सुख से जीवन बिताने लगा।

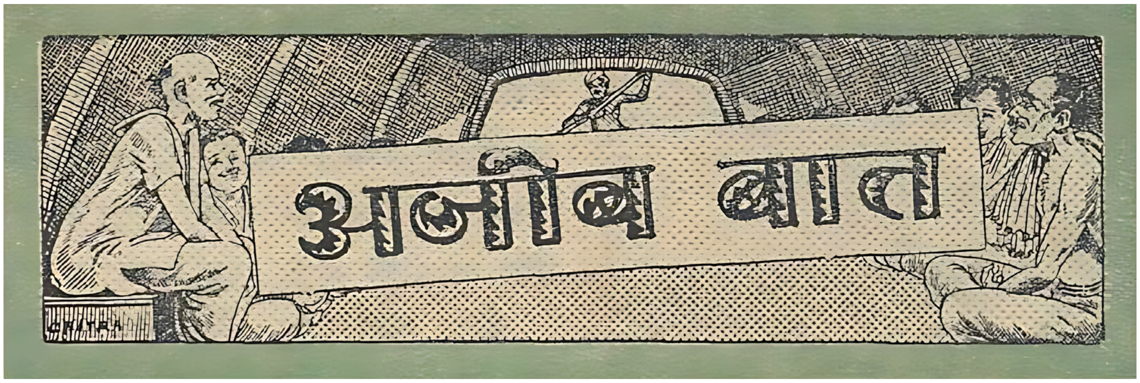

उस समय मेरी उम्र चौदह साल से ज्यादा न होगी। मेरा बड़ा भाई मुझसे चार साल बड़ा था। हम नाव में सफर कर रहे थे और हमारे पास जौ की रोटियों की छोटी-छोटी पोटलियाँ थीं जो हमारी नानी ने हमें राह में खाने के लिए दी थीं। हम लोग जा रहे थे राजपूर। नाव जब छतरगाँव पहुँची तो वहाँ और कुछ आदमी उस पर चढ़ गए। उन में एक लम्बे कद का दुबला-पतला आदमी भी था।

उसको देखते ही नाव में बैठे हुए कुछ आदमियों ने "आइए ! आइए ! जयपालजी !" कह कर उसकी अगवानी की।

"बड़े विचित्र जीव हैं ! कहानी सुनाने में तो कोई इनकी बराबरी नहीं कर सकता !" मेरी बगल में बैठे हुए, लम्बी लम्बी मूँछों वाले किसान ने कहा। इतना कह कर वह उस ओर रुख करके बोला-"जयपालजी ! समय काटने के लिए एकाध अच्छी कहानी सुनाइए न !" कहने भर की देर थी कि जयपालजी ने यों कहानी सुनाना शुरू कर दिया-

"यह बड़ा अच्छा किस्सा है। सुनो ! उन दिनों मैं अमेरिका में था। वहाँ मकानों का किराया बहुत बढ़ा हुआ था। इसलिए मैंने गरीबों के मुहल्ले में एक पुराने मकान का एक कमरा किराए पर ले लिया और उस में रहने लगा।

वहाँ जाने के बाद पहले कुछ दिन तक वहाँ की आव-हवा मुझे को सुहाई नहीं। इसलिए मेरी तबीयत बिगड़ गई। करीब पन्द्रह दिन तक बुखार ने मेरा पल्ला न छोड़ा। उन पन्द्रह दिनों तक उस छोटे से कमरे में टूटी खाट ही मेरी दुनियाँ बन गई। न जाने, उस कमरे की दीवारों पर चूना पोते कितने दिन

अमृत लाल

हो गए थे ? जगह जगह चूना उखड़ आया था और दीवारों पर भद्दे से धब्बे दिखाई देते थे। धब्बे अजीब अजीब शकलों के थे। उन में एक धब्बा ठीक आदमी की शकल का भी था।

मैंने ध्यान से देखा तो पता चला कि वह धब्बा सिर्फ़ आदमी की शकल का ही नहीं था, बल्कि हमारे गाँव के लखपती सेठ करोडराम से बहुत मिलता-जुलता था। उनकी हाण्डी जैसी तोन्द और तोला भर सुँघनी एक साँस में उड़ा देने वाले नथुने उसमें साफ दिखाई पड़ते थे।

मैंने सोचा-"छतरपूर कहाँ ? और अमेरिका कहाँ ? दोनों के बीच कई हजार मील का फासला होगा। हमारे सेठजी तो कभी गाँव से बाहर निकले तक न होंगे। फिर उनका चित्र इस दीवार पर कैसे, कहाँ से आ गया ?"

कैसा गजब है ? मैंने यह सोच कर उस चित्र की ओर और भी ध्यान से देखा तो मालूम हुआ कि पहले दिन जो शकल बैठी दिखाई देती थी वह आज मेरी ही तरह एक खाट पर लेटी दिखाई देती हैं। यह देख कर मुझे और भी अचरज हुआ। उस कमरे में नौकर के अलावा कोई आता जाता न था। इसलिए मैंने उसे बुला कर पूछा-"उस चित्र पर तुमने हाथ तो नहीं लगाया ?" उसने कहा "नहीं !" तब मुझे कुछ नहीं सूझा। मैं उस चित्र की तरफ वैसे ही ताकता रह गया। नौकर बीच बीच में आकर दवाई और सागू-दाना दे जाता था।

इस तरह दिन पर दिन बीतते गए। धीरे धीरे मैं चङ्गा होने लगा। लेकिन दीवार पर की शकल वैसे ही लेटी दिखाई देती थी। और एक अजीब बात यह थी कि उसकी तोन्द जो पहले खूब मोटी और ऊँची दिखाई देती थी

क्रमशः पिचक गई। नथुने भी पतले हो गए। यही क्यों, कालिख का सा उसका रङ्ग बदल कर धीरे धीरे धुन्धला होता गया और नौबत यहाँ तक आ पहुँची कि देखने वाला यह जान भी न सकता कि यह करोडरामजी का चित्र है या नहीं ?

जब मेरे बदन में ताकत आ गई और मैं उठने-बैठने लगा तो मैंने नौकर को बुला कर कहा- "भई ! मुझे आज का कोई अखबार ला दो तो ?" उसने हमारे ही देश का एक अखबार लाकर मेरे सामने डाल दिया। मैंने अखबार खोल कर देखा तो एक जगह लिखा हुआ था- "छतरपूर के लखपती श्री करोडराम बदहजमी के मारे बेहाल हैं। तरह तरह के डाक्टर-वैद्य आकर उनका इलाज कर रहे हैं। लेकिन अभी तक कोई आराम नहीं हो रहा है।"

मैंने मायूसी के साथ अखबार नीचे फेंक दिया और दीवार की तरफ देखा। मुझे ऐसा लगा जैसे करोडराम की सूखे काँटे जैसी काया बेचैनी के मारे इधर उधर लोट रही है। वह दृश्य मुझसे देखा न

गया। इसलिए मैंने उसी दिन कमरा बदल दिया।

और तीन दिन बाद मैंने अखबार में पढ़ा कि करोडराम अपने मित्रों और रिश्तेदारों को शोक में डुबो कर दिवङ्गत हो गए हैं। मैं अपने आँसू पोंछता हुआ उस कमरे की ओर दौड़ा। कमरे में जाकर मैंने देखा तो दीवार पर उस धब्बे की कोई निशानी बाकी न थी। सारी दीवार एक सी सफेद जान पड़ती थी जैसे किसी ने हाल ही में उस पर चूना पुतवाया है। तब मैंने नौकर को बुला कर पूछा-"भई ! हाल में इस कमरे में चूना पोता गया है क्या ?" उसने कहा- "नहीं तो।"

जयपालजी इतना कह कर चुप हो गए। श्रोता लोग आपस में चर्चा करने लगे।

"कैसा गज़ब है ! करोडराम की शकल सात समुन्दर पार, हज़ारों मील दूरी पर, एक दीवार पर दिखाई पड़ी! इस से बड़ा अचरज और क्या हो सकता है ?" एक ने कहा।

"दिखाई ही नहीं पड़ी, बल्कि यहाँ करोडराम की काया में रोग के मारे जो जो परिवर्तन होते गए, सब चित्र में दिखाई दिए और उनके यहाँ गुज़रते ही वहाँ चित्र गायब हो गया। यह तो और भी अचरज की बात है !' दूसरे ने कहा।

इतने में नाव पर एक कोने में बैठे हुए एक भले- मानुस ने पूछा-"हाँ, जयपालजी ! आप अमेरिका कब गए थे ? मुझे तो इस की कोई खबर ही न थी ! विलायत जो लोग जाते हैं सब चोटी काट कर सूट-बूट पहन कर आते हैं। मैं आप को बचपन से ही देखता आया हूँ। आप ने कभी सूट-बूट नहीं पहने। मुझे तो यह भी नहीं मालूम था कि आप कभी विलायत हो आए हैं। अच्छा, यह जाने दीजिए ! लेकिन यह तो बताइए कि अपने गाँव में करोडराम नाम के लखपती किस ज़माने में रहते थे ? जहाँ तक मुझे मालूम है, हमारे गाँव में कभी कोई लखपति थे ही नहीं !" उसने भण्डा फोड़ दिया।

तब जयपालजी ने हँसते हुए कहा- "मैं तो किस्सा सुना रहा था ! मैं विलायत कभी नहीं गया और करोड़राम नाम के कोई व्यक्ति हमारे गाँव में नहीं थे। तो क्या हुआ ? किस्सा तो सुनने में अच्छा रहा ? और क्या चाहते हो ?" यह कह कर उन्होंने सुँघनी की डिबिया निकाली और चुटकी भर सुँघनी निकाल कर नाक में ठूँस ली।

किसी समय नाग लोक में एक महा-नाग रहता था। उस साँप ने सर्प-राज आदिशेष को प्रसन्न कर लिया और उनके आश्रय में हमेशा पीछे-पीछे फिरने लगा।

एक दिन आदिशेष ने उस नाग से कहा-"भई ! तुम हमेशा मेरे पीछे-पीछे लगे रहते हो। इससे मालूम होता है तुम मुझ से कुछ माँगना चाहते हो। हिचकिचाओ नहीं। जो चाहते हो माँगो ! मेरे वश की होगी तो जरूर दूँगा।"

तब उस नाग ने उनको प्रणाम करके कहा-"सर्पराज ! यह सच है कि मैं आप से कुछ माँगना चाहता हूँ। आप बुरा न मानें तो अर्ज करूँ।"

"कोई बात नहीं ! तुम जो चाहते हो, माँग लो !" सर्प- राज ने मुसकुरा कर बढ़ावा दिया।

इस पर उस नाग ने मन ही मन फूल कर कहा-"देव ! मैं आप के आश्रय में बेखटके दिन काट रहा हूँ। लेकिन मुझे एक फिक्र है। वह यह है कि अन्य नागों की तरह मेरे भी एक ही सिर है। यह मुझे अच्छा नहीं लगता। इसलिए आप ऐसी कृपा करें जिस से मुझे भी आप की तरह हजार सिर नहीं तो, कम से कम एक सौ सिर ज़रूर हो जाएँ।"

तब सर्प-राज ने हँस कर कहा-"पगले कहाँ के ! मेरे हजार सिर बेकार नहीं रहते। इन सिरों को सारे संसार का बोझा सम्हालना पड़ता है। नहीं तो मैं भी सब की तरह एक ही सिर से काम चला लेता। मान लो कि तुम्हें एक सौ या दो सौ सिर मिल गए। इस से नाहक झञ्झट बढ़ा लेने सिवा और क्या फायदा होगा ? उन सब

मदन गोपाल

सिरों की रक्षा करने में ही तुम्हारा सारा वक्त खराब हो जाएगा। इसलिए एक ही सिर से काम चला लेना अच्छा होगा।" लेकिन उस नाग को उनकी बात भाई नहीं । उसने मन में सोचा-"बस, सारी शेखी भूल गई इन की ! बड़ी शान से कहते थे- "जो माँगो सो देंगे।" जैसे सब कुछ इन्हीं के हाथ में है !"

"क्यों ? बोलते क्यों नहीं ?" सर्पराज ने पूछा।

इस पर उस नाग ने कहा-"अच्छा ! कम से कम एक सिर तो और दिला दीजिए।"

तब सर्प-राज ने कहा-"अच्छा। जाओ ! तुम्हारी इच्छा पूरी होगी ! तुम्हारी पूँछ में दूसरा सिर पैदा हो जाएगा। लेकिन उस सिर में आँखें न होंगीं। क्योंकि उसमें एक मुश्किल है। अगर उस सिर में भी आँखे दे दीं तो वह तुम्हें हमेशा अपनी राह पर चलाना चाहेगा। इधर पहला सिर भी चुप नहीं बैठेगा। इस तरह दोनों के बीच खींचा-तानी होगी जिस में नाहक तुम्हारी जान चली जाएगी। इसलिए आँखों वाला होने के कारण पहला सिर तुम्हें राह दिखाएगा और दूसरा सिर सिर्फ़ शरीर की शोभा बढ़ाएगा।"

तब से उस नाग के दो सिर हो गए। इस से उसका हर्ष और साथ साथ गर्व भी बढ़ गया। दूसरे नाग उसे देख कर जलने भी लगे।

आदिशेष की सलाह के अनुसार उस नाग ने कुछ दिन तक अपने आँखों वाले सिर को ही मार्ग दिखाने का भार सौंपा। वह उसे जिधर ले जाता उसी ओर चला जाता। लेकिन कुछ दिन बाद पूँछ वाले दूसरे सिर ने उससे कहा- "मुझे

तुम अपनी मरजी से माँग कर ले आए हो। इसलिए तुम्हें अपने पुराने सिर से ज्यादा प्रेम और आदर मुझ पर दिखाना चाहिए। लेकिन तुम ऐसा नहीं कर रहे हो ! तुम कम से कम मुझे उसके बराबर भी नहीं मानते। क्या इस तरह तरफदारी करना तुम्हारे लिए उचित है ?" वह भुनभुनाने लगा।

तब उस नाग ने कहा-"अरे ! मैं तो सर्पराज आदिशेष की सलाह पर चल रहा हूँ। यही नहीं, अधिकार किसी एक के हाथ में ही होना चाहिए। नहीं तो बड़ी गड़बड़ी हो जाती है।"

तब दूसरे सिर ने कहा-"अच्छा, इतना तो मैं भी मानता हूँ । लेकिन हमेशा हुक्म उसी का चलेगा तो फिर मेरा मौका कब आएगा ? इसलिए कुछ दिन तक अधिकार मुझे दे दो और उसे चुप बैठने को कहो !"

यह सुन कर उस नाग ने कहा-"तुम जो कहते हो उसमें भी कुछ सत्य है। लेकिन उसके जितना तजुर्बा तुम कहाँ से लाओगे ? सबसे बड़ी बात तो यह है कि उसके आँखें हैं और तुम्हारी नहीं हैं। बड़ों ने कहा भी है"सर्वेंद्रियाणाम् नयनम् प्रधानम्।"

सब अङ्गों में आँख प्रधान है। तुम्हारे तो आँखें नहीं हैं। तुम राह कैसे दिखाओगे ? खैर, मैंने अधिकार तुम्हें सौंप भी दिया तो वह 'अन्धेर नगरी चौपट राजा' जैसा होगा। इसलिए तुम बेकार की झञ्झट अपने सिर न लो। मेरी बात मानो !"

लेकिन वह सिर भला उसकी बात क्यों मानने लगा ? "विनाशकाले विपरीत बुद्धिः।" उसने क्या किया, जानते हो ?

पहला सिर अपनी आँखों से देखते हुए, साँप को सावधानी से उस जगह लिए जा रहा था जहाँ चारा मिलने की उम्मीद थी। लेकिन बीच में दूसरे सिर ने एक सूखे ठूँठ को

ज़ोर से पकड़ लिया। अब बेचारा पहला सिर कितना ही जोर क्यों न लगाए, साँप का

शरीर जरा भी टस से मस न होता था। यहाँ तक कि साँप का बदन लचकने लगा। लेकिन दूसरे सिर ने अपनी पकड़ न छोड़ी। अब पहले सिर को डर लगने लगा कि और जरा ज़ोर लगाने से साँप का बदन टूक-टूक हो जाएगा। इसलिए वह चुपचाप पड़ा रहा। अब दूसरा सिर गर्व से फूल कर आप ही राह दिखाने लगा।

तब पहले सिर ने नाग से फरियाद की-"देखा तुमने ? दूसरा सिर किधर खींचे ले जा रहा है ? अब बोलो ! क्या कहते हो ?"

नाग ने हार मान ली और झुञ्झला कर कहा-"जाने दो उसे जहन्नुम में ! मैं क्या करूँ ?"

पहले सिर ने कहा-"मैंने अपना फर्ज़ अदा कर दिया। अब आगे तुम्हारी मरजी !" इतना कह कर वह भी चुप हो गया।

खैर, अब दूसरे सिर की अन्धी हुकूमत शुरू हुई। बेचारे साँप को वह जाने कहाँ कहाँ घसीट ले जाने लगा। एक दिन वह उस साँप को बड़ी भारी लपटों में खींच ले गया। उसे तो दिखाई नहीं देता था। बस, पल भर में साँप का सारा शरीर झुलस कर खाक हो गया। वह सिर आप भी डूबा और दूसरों को भी ले डूबा। यह खबर जान कर दूसरे नागों ने कहा-"इस बेवकूफ ने बेकार की बला मोल ली। भगवान ने एक सिर दिया था। लेकिन इसे सन्तोष न हुआ। इसने दूसरा सिर भी माँगा। अब देखो, क्या नतीजा हुआ ?"

जिन लोगों को सन्तोष नहीं होता वे इसी तरह तबाह हो जाते हैं । "सन्तोषी सदा सुखी।"

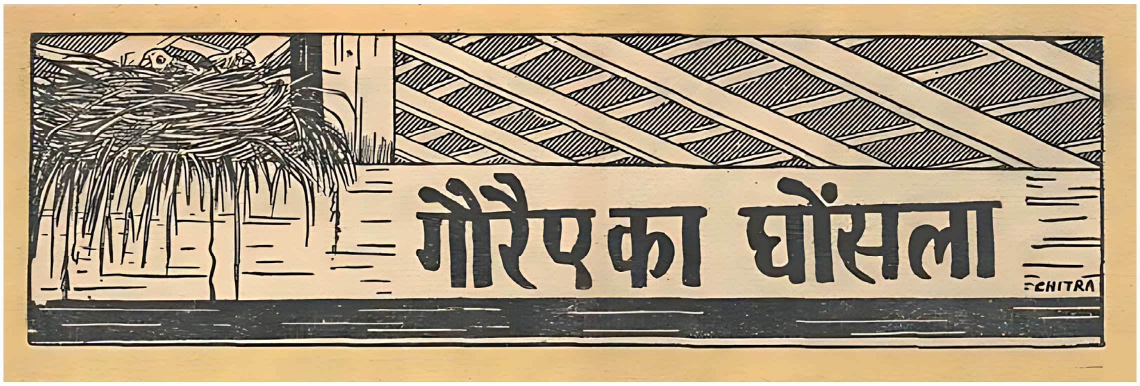

किसी देश में एक जुलाहा रहता था। उसकी एक लड़की थी जिसका नाम था रूपवती। वह लड़की ऐसी खूबसूरत थी कि उसका नाम ही हो गया था रूपवती। जुलाहे के मन में बड़ी उमङ्ग थी कि अपनी चाँद सी बिटिया को वह उस शहर के राजा के सिवा और किसी से न ब्याहे।

लेकिन उसकी पत्नी कहती-"कहाँ राजा और कहाँ हम कङ्गाल ? भला राजा हम जैसे निर्धनों की बेटी से ब्याह क्यों करने चला ? इसलिए फिजूल की आस न लगा बैठिए। मामूली हैसियत के किसी गुणवान लड़के से उसकी सगाई कर दीजिए !" लेकिन वह कहता-"चल, तुझे क्या मालूम ?" वह उसकी बात पर कान न देता और हमेशा इसी ध्यान में लगा रहता। यों दिन बीत रहे थे कि एक दिन हठात् राजा से उसकी भेंट हो गई। राजा ने पूछा-"क्या खबर है?"

"कोई खास बात तो नहीं, महाराज ! हाँ एक अर्ज़ है; हम जुलाहे चर्खे पर सूत कातते हैं और उस सूत से करघे पर कपड़े बुनते हैं। लेकिन मेरी लड़की फूस से सोने का तार निकालती है।" उस जुलाहे ने जवाब दिया।

"अच्छा ! यह तो गजब की बात है ! उस लड़की को रनवास में ले आओ ! हम भी यह अचम्भा देख लें।" राजा ने उसकी बात सुनी और चकित होकर हुक्म दिया।

जुलाहे ने जब घर लौट कर अपनी पत्नी से सारी कहानी सुनाई तो उसने नाक पर उँगली घर कर कहा-"हाय राम ! अब क्या होगा ? आपने राजा से ऐसी गप क्यों उड़ा दी ? ऐसी बात कभी किसी ने देखी-सुनी भी है ? अब बताइए, क्या कीजिएगा ? जब सच मालूम हो जाएगा तो राजा न जाने, कितना गुस्सा होगा ?" "अरी बेवकूफ औरत ! मैंने यह जाल

अबधेश नारायण

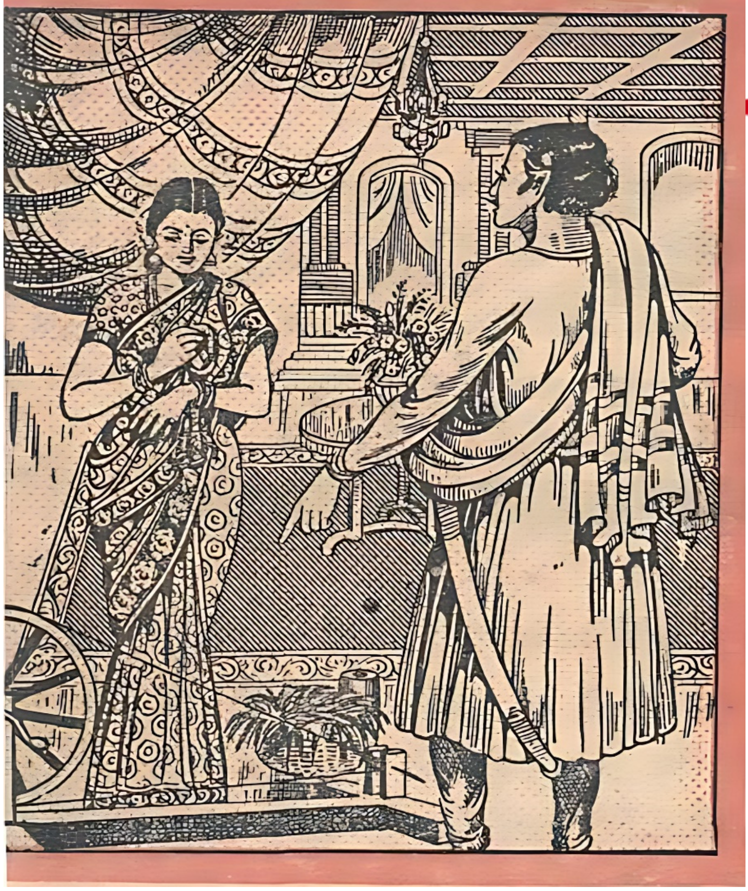

रचा है लड़की को रनवास में भेजने के लिए ! बिटिया का चाँद सा मुखड़ा देखते ही राजा बावला हो जाएगा। उसे फूस से सोने का सूत निकालने की बात याद भी नहीं रहेगी। वह तुरन्त पुरोहित को बुला कर शादी का लगन ठहराएगा।" उस जुलाहे ने जवाब दिया और रूपवती से सोलहों सिङ्गार करने को कहा। फिर उसने उसे शान से गाड़ी पर चढ़ा कर राजा के किले में भेज दिया। राजा ने रूपवती को देखते ही एक चरखा और टोकरी भर फूस उसके सामने रखवा दिया और कहा-"मैं कल शाम को फिर तुम्हें देखने आऊँगा। तब तक तुम्हें यह सारा फूस सोने के तारों में बुन देना होगा। नहीं तो खैर नहीं !" यह कह कर वह चला गया।

अब बेचारी रूपवती की तो सिट्टी-पिट्टी गुम हो गई। उसने सोचा-"हाय! पिता ने बैठे-बिठाए यह बला क्यों मोल ले ली ? अब मैं क्या करूँ? इस रनवास में मेरा सहारा कौन है?" यह सोच कर वह आँसू बहाने लगी।

इतने में बारह अंगुल का एक बौना खिड़की में से कूद कर अन्दर आ गया। "बेटी ! डरने की कोई बात नहीं ! मैं तुम्हारी मदद करूँगा।" उसने रूपवती के पास जाकर कहा। उसकी नाक लम्बी थी और दाढ़ी तो पैरों तक पहुँचती थी।

उसकी शकल देख कर पहले तो रूपवती को डर लगा। लेकिन जब उसने चरखे के पास बैठ कर फूस से सोने का तार निकालना शुरू किया तो यह देख कर उसके मन में धीरज हुआ और वह बहुत खुश हुईं।

यह देख कर बौने ने सूत निकालना बन्द कर दिया और पूछा-"अच्छा ! बेटी ! मैं इस सारे सूत से सोने का तार निकाल दूँगा। बताओ, बदले में तुम मुझे क्या दोगी ?"

"ऐसा ! तब तो मैं अपने गले का रत्न-हार ही तुझे दे दूँगी !" रूपवती ने बेधड़क जवाब दिया।

"अच्छा!" कह कर उस बौने ने आनन-फानन उस सारे फूस से जरी निकाल दी और रूपवती का दिया हुआ हार लेकर, खिड़की में से बाहर कूद कर गायब हो गया।

शाम को राजा ने आकर देखा तो मकड़ी जाले के से भी महीन जरी दिखाई दी। यह देख उसकी आँखें चौधियाँ गईं और उसका लालच और भी बढ़ गया। "मैंने इसे टोकरी भर ही फूस क्यों दी जब कि खेतों में फूस की ढेरियाँ लगी हुई हैं ?" राजा ने सोचा और फूस की एक ढेरी मँगवा कर वहाँ रखवा दी और रूपवती से कहा-"सबेरा होने के पहले ही इस ढेरी भर फूस से जरी निकाल देनी होगी। नहीं तो तुम्हारी खैर नहीं !" यह कह कर वह चला गया।

हठात् रूपवती को बौने की याद आ गई। ध्यान करते ही बौना उसके सामने प्रत्यक्ष हो गया और बोला- "अच्छा! मैं इस सारे ढेर को जरी में बदल दूँगा। बोलो, क्या दोगी तुम मुझे ?" "मेरे पास सिर्फ़ यह एक अँगूठी बच गई है। यह दे दूँगी।" रूपवती ने कहा।

बौने ने जरी निकालना शुरू किया और थोड़ी ही देर में समूचे ढेर से सोने का तार निकाल दिया। रूपवती ने उसे अँगूठी दे दी। बौना अँगूठी लेकर खिड़की से बाहर कूदा और गायब हो गया।

सबेरे जब राजा ने आकर देखा तो उसके अचरज का ठिकाना न रहा। उसने सोचा-"अब मेरे राज में फूस क्या, सोना ही सोना है।" उसने तुरन्त फूस की तीन ढेरियाँ लाकर वहाँ रखवा दीं। यह देख कर रूपवती का धीरज टूट गया और उसने झल्ला कर पूछा-"महाराज ! मुझे कितने दिन तक यों सूत कातना होगा ?"

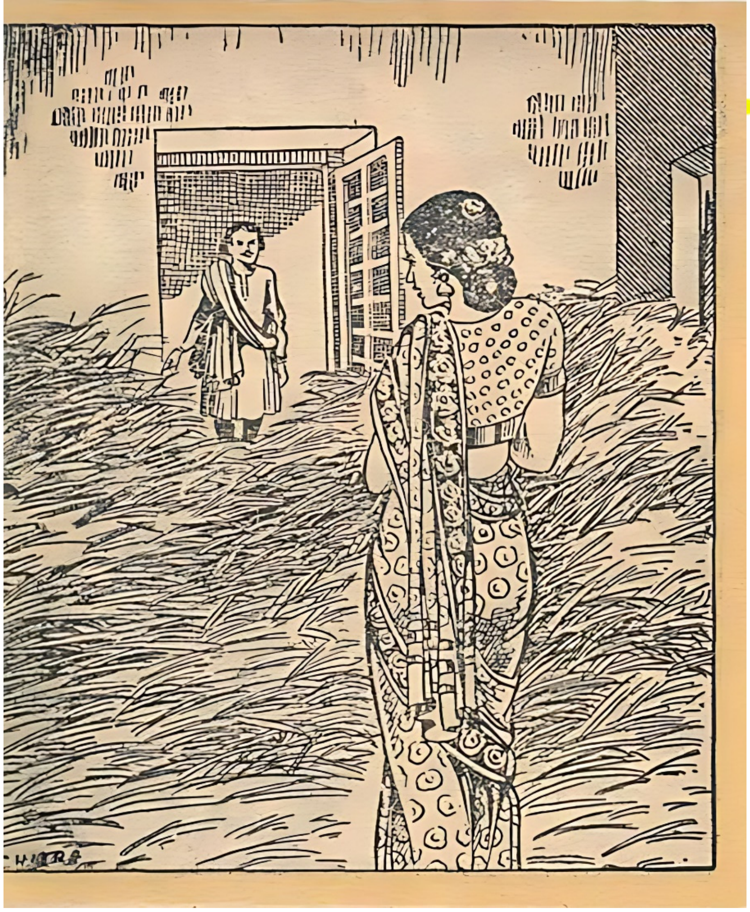

लेकिन उसकी बात सुन कर राजा को गुस्सा नहीं आया। क्योंकि अब उसके मन में रूपवती के प्रति प्रेम पैदा हो गया था उसने कहा-"बस, इतना ही और निकाल दो ! फिर कभी नहीं निकालना होगा !" यह कह कर वह चला गया।

राजा के जाते ही बौने ने आकर पूछा-"ये ही तीन ढेरियाँ ? अगर कहो तो मैं इस राज में जितनी फूस है सारी की सारी सोने के तार में बदल दूँगा और गाय-बैल के लिए चारा भी नहीं रह जाएगा। लेकिन पहले बता दो कि मुझे दोगी क्या ?"

तब बेचारी रूपवती ने आँसू बहाते हुए कहा-"अब मैं क्या दे सकती हूँ ? अब तो मेरे पास कुछ भी नहीं बचा रहा।"

तब बौने ने कहा-"जब मैं इन तीनों ढेरों से जरी निकाल दूँगा तो राजा खुश हो जाएगा और तुमसे ब्याह कर लेगा। एक साल बाद तुम्हारे एक लड़का पैदा होगा। अगर तुम मुझे वचन दो कि वह लड़का मुझे दे दोगी तो मैं जरी निकाल दूँगा।"

"यदि राजा से ब्याह होगा और यदि मेरे लड़का होगा तो मुझे लड़का इसे देना पड़ेगा ? यह सब कुछ होने जाने वाला नहीं। इसलिए वचन देने में हर्ज क्या है ?" यह सोच कर रूपवती ने उसकी बात मान ली। तुरन्त बौने ने सारी फूस से जरी निकाल दी और गायब हो गया।

राजा ने आकर वह सारा सूत देखा तो खुशी से फूला न समाया। उसी दिन उसने रूपवती से ब्याह कर लिया।

ठीक एक साल बाद रूपवती के चाँद सा एक लड़का पैदा हुआ। तीस दिन बाद जब लड़के को पालने में लिटाया जा रहा था तो बौने ने आकर रूपवती से कहा-"रानी ! मैं तुम्हारे बेटे को ले जाने के लिए आया हूँ।"

रानी का कलेजा धक सा रह गया। उसे अपने वचन की बात याद ही नहीं थी। उसने करुण-स्वर में कहा-"मेरे लाल को छोड़ दो! उसके बदले जो माँगोगे मैं दे दूँगी।"

लेकिन बौना भला क्यों मानता ? उसने कहा-"मुझे वह लड़का ही चाहिए !" आखिर रानी ने लाचार होकर बिनती की-"अच्छा! मगर लड़के को कम से कम एक साल मेरे पास रहने दो। फिर तुम ले जाना !" बौना "अच्छा !" कह कर गायब हो गया। लेकिन ठीक साल भर बाद वह चुपचाप आकर रानी के सामने खड़ा हो गया।

तब रानी ने कहा-"हाय ! मैं लड़के को अभी घुटनों के बल रेंगना सिखा रही हूँ। मेरे मन में बड़ी लालसा है कि उसे आँगन में चलते देख लूँ ! बस, एक साल और मेरे पास रहने दो उसे !" बौना "अच्छा !" कह कर चला गया। लेकिन ठीक एक साल बाद फिर आ धमका !

"मेरे बच्चे ने तो अभी बोलना भी सीखा नहीं। उसकी तोतली बोलियाँ सुनने की मेरी बड़ी लालसा है। इसलिए भाई, एक साल और मेरे पास रहने दो उसे !" रानी गिड़गिड़ाती हुई बोली।

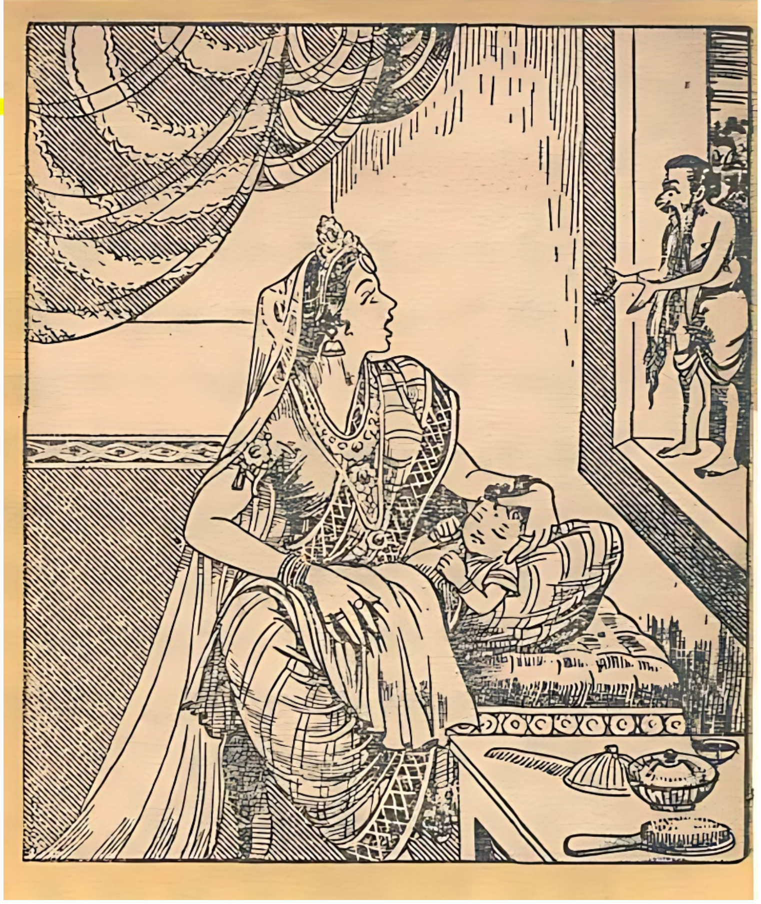

लेकिन इस बार बौने को गुस्सा आ गया। उसने कहा-"रानी ! तूने मुझे मजाक समझ लिया है ? क्या समझ रही हो मुझे ? सब भूतों का राजा हूँ। अपने देश वालों से कुछ झगड़ा हो गया। इसलिए मैं इधर चला आया। अगर तुम मुझको गुस्सा दिलाओगी तो तुम सब को निगल जाऊँगा ! समझीं !"

तब रानी ने बात टालने के लिए पूछा-"अच्छा ! यह बताइए भूत-राज ! आपका अपने देश वालों से झगड़ा क्यों हो गया ?"

भूत ने जरा शान्त होकर कहा- "अब तुम यह सब सुन कर क्या करोगी ? गौरैयों

के मारे झगड़ा हो गया था। बात यह थी कि एक दिन जब मैं सो रहा था कुछ गौरैयों ने आकर मेरी दाढ़ी में घोंसला बनाना शुरू किया था, जैसे उन्हें इस दुनियाँ में और कहीं जगह ही न मिली हो। अच्छा, छोड़ो, यह सब सुन कर तुम क्या करोगी ? मैं जाता हूँ। लेकिन ठीक, एक साल बाद आऊँगा और लड़का नहीं दोगी तो बस...." यह कह कर बौना वहाँ से चला गया।

देखते देखते वह साल भी बीत गया। रानी का बेटा बोलने भी लग गया था। अचानक एक दिन बौना आ धमका। उसे देखते ही रानी के होश उड़ गए। वह लड़के को देख देखकर आँखों में आँसू भरने लगी। इतने में लड़का जो लेटे लेटे छत की ओर देख रहा था चिल्लाया-"अम्मा ! देखो गौरैए का घोंसला ! गौरैए का घोंसला !" रानी ने जब छत की तरफ देखा तो उसे भी वह घोंसला दिखाई पड़ा। उसने कहा-"हाँ बेटा ! गौरैए का घोंसला!' यह सुनकर वहाँ जितनी नौकरानियाँ थीं सब चिल्ला उठीं-"हाँ माँ जी ! गौरैए का घोंसला ! गौरैए का घोंसला !"

यह सब सुन कर बौने ने आँखें लाल-पीली करके कहा-"तो तुम भी मुझे चिढ़ाना चाहती हो ? क्या मैं अपने देश से इसीलिए भाग कर नहीं आया था ? ठहरो! देखो ! मैं तुम्हें कैसा मजा चखाता हूँ ?"

तब उन सब को मालूम हो गया कि 'गौरैए का घोंसला' कहने से बौना चिढ़ता है। बस, अब वहाँ जितने थे सब तालियाँ बजाते हुए, 'गौरैए का घोंसला !' कह कह कर बौने का मजाक उड़ाने और चिढ़ाने लगे। आखिर बौने ने खीझ कर कहा-"तुम सब मुझे चिढ़ाती हो न ? अच्छा, अब मैं कभी इस घर में कदम न रखूँगा।" यह कह कर वह चला गया।

रानी फूली न समाई। बला टल गई।

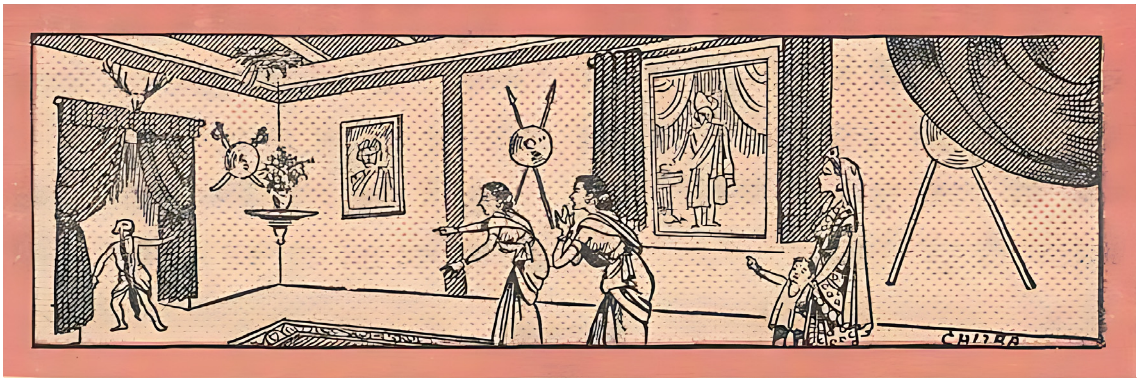

नौ

कहते हैं किसी समय एक गाँव में एक बड़ा जमींदार रहता था। लेकिन वह कभी किसी को एक पाई भी देने का नाम नहीं लेता था। जब उसका अन्तकाल निकट आ गया तो किसी ने गाँव में खबर फैला दी कि वह अपनी सारी दौलत गरीबों को बाँटने वाला है।

तब दस-पाँच आदमियों ने उसके पास जाकर उसकी बड़ी प्रशंसा की और अपना आनन्द प्रकट किया। तब जमींदार ने कहा-"भैया ! मैंने अनेकों पाप किए और दोनों हाथों खूब रुपया कमाया। किसी ने कहा भी है-"दस गरीब बरबाद होते हैं तो एक अमीर का घर आबाद होता है।" अब मैं सोचता हूँ कि यह सारी धन-दौलत दूसरों के पसीने की कमाई है। न जाने कितने अभागों के मुँह का कौर छीन छीन कर मैं इतना बड़ा आदमी हो गया हूँ। इसीलिए मैंने अब सारी जायदाद गरीबों को बाँट देने का निश्चय किया है।" यह सुन कर वहाँ जितने लोग थे, सब जमींदार की जय बोलने लगे।

इतने में जमींदार के लड़के रोते-धोते वहाँ आ पहुँचे। जमींदार ने उनको ढाढ़स देकर कहा-"प्यारे लड़को ! तुम लोग चिन्ता न करो! मैं तुम्हारी भलाई के लिए ही सारी जायदाद गरीबों को बाँट रहा हूँ। मेरे पास पहले एक कौड़ी भी न थी। मैंने अपनी मेहनत से यह सब कमाया। तुम लोग भी उसी तरह अपनी रोटी आप कमा कर लायक बनो !"

जमींदार ने अपनी सारी जायदाद गरीबों को दिला दी और निश्चित होकर आँखें मूँद लीं। पीछे हिसाब-किताब देखने पर पता चला कि उसके पास बची थी तीस हजार की जायदाद और कर्ज़ था एक लाख पचास हज़ार का। अदालत में जाने पर फैसला हुआ कि जो गरीब उसकी जायदाद के वारिस बने उन्हें उसका कर्ज़ भी भरना होगा।

शीला चौहान

दस

किसी गाँव में एक लालची लाला रहता था। वह पैसे के लिए नीच-से-नीच कार्य भी करने को तैयार हो जाता। यह बात सब को मालूम थी। एक दिन एक पड़ोसी ने आकर उससे कहा-"लाला ! यहाँ से दो कोस की दूरी पर एक बड़ी बाँबी है। उस बाँबी में नागराज रहते हैं। भक्त-लोग जाकर वहाँ पूजा करते हैं और दक्षिणा के पैसे बाँबी में गिराते हैं। मेरे बचपन से ही ऐसा होता आया है।"

"तो तुम ने बाँबी खोद कर वह सारा धन ले क्यों न लिया ?" लाला ने पूछा। "बाप रे बाप! उस बाँबी पर कौन हाथ लगाए ! नागराज को गुस्सा आ गया तो हम अन्धे हो जाएँगे।" उस आदमी ने कहा।

'अरे ! यह सब अन्ध-विश्वास है ! कुछ नहीं ! मुझे दिखा दो न वह बाँबी ! लेकिन यह बात किसी से कहना नहीं।" यह कह कर लाला ने उसका मुँह बन्द करने के लिए पाँच रुपए दिए।

रातों-रात लाला ने दस मजदूरों को बुला लिया और जाकर वह बाँबी खुदवाई। उसने साँपों को मरवा डाला। एक मजदूर को साँप ने डस लिया। वह मर गया। लाला को उसके परिवार को हरजाना चुकाना पड़ा। लेकिन सारी बाँबी खोदने पर उसे मिले तीन सौ ताँबे के पैसे! याने तीन रुपए से कुछ ज्यादा ! पड़ोसी भी पाँच रुपए ले गया। मजदूर के परिवार को हरजाना देना पड़ा। और इस सारी मेहनत के बदले में उसे मिले तीन रुपए और कुछ पैसे ! लालची लाला को अच्छी सज़ा मिली।

राजा कौन ?

[उबैदुल्ला सिद्दिकी]

फ्रांस का मशहूर राजा नेपोलियन एक बार अपने दरबारियों के साथ जङ्गल में शिकार खेलने गया। सहसा एक हिरन उधर आ निकला। उसका पीछा करते करते वह अपने दरबारियों से दूर हो गया और बड़ी देर तक जङ्गल में इधर-उधर भटकता रहा। आखिर किसी तरह घूम-फिर कर वह जङ्गल से बाहर हुआ। लेकिन तब तक राह भूल गया था। संयोग से उसे रास्ते में एक किसान मिल गया। उसने उससे राह दिखाने को कहा। तब किसान उसके आगे आगे चल कर राह दिखाने लगा। चलते-चलते दोनों में बातें होने लगीं। थोड़ी देर बाद नेपोलियन ने पूछा-"हाँ, लोग नए राजा के बारे में क्या कहते हैं ? बड़ाई करते हैं या बुराई ?" किसान ने कहा-"मैंने तो नए राजा को देखा नहीं। लेकिन लोग कहते हैं कि वह बड़ा अच्छा आदमी है।" तब नेपोलियन ने पूछा-"क्या तुम इस नए राजा को देखना चाहते हो ?" किसान ने कहा-"जरूर ! राजा को कौन नहीं देखना चाहता ?" तब नेपोलियन ने कहा-"अच्छा ! तो चलो ! मैं राजा के पास ही जा रहा हूँ। मैं तुम्हें उनके दर्शन करा दूँगा।" तब किसान ने पूछा-"ठीक। लेकिन मैं उसे पहचानूँगा कैसे ?" नेपोलियन ने कहा-"सुनो ! राजा को देखते ही सब लोग टोपी उतार लेंगे। इसलिए जिस के सिर पर टोपी होगी वह राजा होगा। तुम उसे आसानी से पहचान लोगे। किसान ने कहा-"बहुत अच्छा।" थोड़ी देर बाद नेपोलियन किसान के साथ अपने महल में पहुँचा। उसे देखते ही सब लोगों ने अपनी अपनी टोपी उतार ली। यह देख कर किसान की समझ में आ गया कि वही राजा है। "क्यों ? तुमने राजा को पहचान लिया ?" नेपोलियन ने पूछा। "जी हाँ ! लेकिन एक शक है ! टोपी तो मेरे सिर पर भी है। हम दोनों में कौन राजा है ?" किसान ने जवाब दिया। नेपोलियन उसकी बात सुन कर बहुत खुश हुआ। उसने अपने सर की टोपी उतार ली और कहा-"सच्चे राजा तुम्हीं हो !"

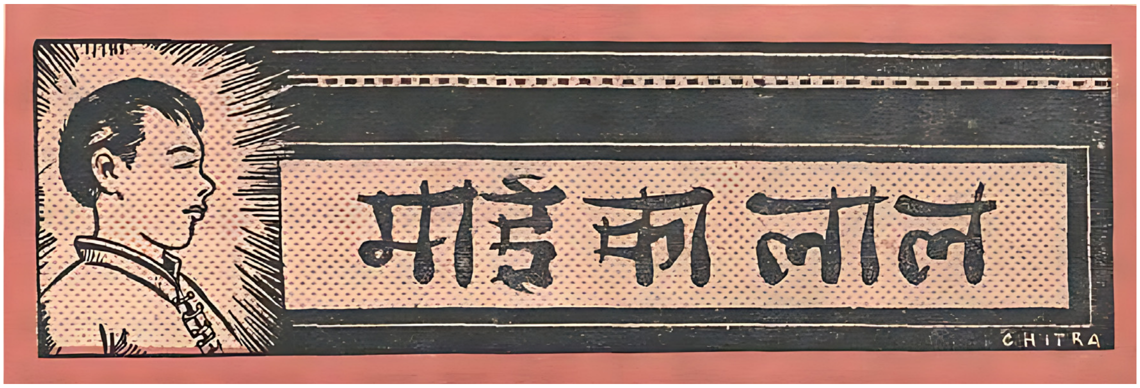

चीन में एक पुराना शहर था। उसमें हुएन नाम का एक अमीर रहता था। वह बहुत बुरा आदमी था। अगर किसी पर उसे गुस्सा आ जाता तो उसकी खूब खबर लिए बिना न रहता। रुपया पानी की तरह बहा कर, गुण्डों को भेजता और अपने दुश्मनों को मार-पिटवा कर तङ्ग करता।

उसी शहर में वाङ्ग नाम का एक गरीब आदमी भी रहता था। वाङ्ग गरीब तो था। लेकिन बड़ा साहसी था। वह हुएन के जुल्मों को देख कर बर्दाश्त न कर सका। इसलिए उसने एक दिन उस शहर के राजा के पास जाकर शिकायत की और साथ ही प्रार्थना भी की कि वे हुएन को बुला कर फटकारें।

राजा ने वाङ्ग की बातों पर कोई ध्यान न दिया। उसने मन में सोचा कि हुएन अमीर है; इसलिए उससे जल कर वाङ्ग उनके पास चुगली खाने आया है। उसने सच जानने की कोशिश नहीं की। इस तरह उसने वाङ्ग को ही फटकारा और कहा कि कभी मेरे पास ऐसी चुगलियाँ न खाना।

वाङ्ग ने सोचा-"इन्साफ गरीबों के लिए नहीं।" वह उदास मन से घर लौटने लगा। इतने में उसे "हाय बाप!" कह कर किसी के रोने की आवाज सुनाई दी।

तुरन्त वाङ्ग ने दौड़ कर उस जगह जाकर देखा तो हुएन हाथ में एक कोड़ा लिए एक बुढ़िया को बेरहमी से पीट रहा था। बुढ़िया की पीठ छिल गई थी और उस से खून निकल रहा था। लेकिन हुएन को इसकी क्या परवाह थी ? यह दृश्य देख कर वाङ्ग के बदन में आग सी लग गई। वह गुस्से में आपे से बाहर हो गया। नज़दीक ही हुएन का बरछा पड़ा था। उसने उसे उठा कर उसके कलेजे में भोङ्क दिया। बस, एक ही चोट में हुएन ठण्डा हो गया।

विश्वनाथ

क्रोध में वाङ्ग ने हुएन को तो मार डाला। लेकिन थोड़ी देर बाद वह अपने किए पर पछताने लगा। वहाँ से चल कर वह सीधे राजा के पास पहुँचा और बोला-"हुजूर ! मैंने हुएन को मार डाला है। आप मुझे जो दण्ड उचित समझें, दें।" "हुएन जैसे रईस आदमी को वाङ्ग जैसा कङ्गाल मार डाले ? इन भिखमङ्गों का तो मिजाज सिर पर चढ़ गया है।" राजा ने सोचा और तुरन्त वाङ्ग को फाँसी की सजा दी।

वाङ्ग को फाँसी देने में और दो दिन बच रहे थे कि वाङ्ग के दोस्तों और उस शहर के कुछ शरीफ भले मानुसों ने जाकर राजा से विनती की-"हुजूर ! वाङ्ग जितना शरीफ़ आदमी है हुएन उतना ही बड़ा जालिम था। उसका अत्याचार देख कर, क्रोध से अन्धा होकर वाङ्ग ने उसे मार डाला। उसकी उस से कोई खास दुश्मनी नहीं थी। इसलिए आप रहम करके वाङ्ग को माफ कर दें।" लेकिन राजा ने उनकी बातों पर कान न दिया। तब वे सब निराश होकर लौटने लगे। इतने में चौदह साल के एक लड़के ने आकर राजा को दण्डवत किया और कहा-"हुजूर! आप मेरे पिता के बदले मेरी जान ले लीजिए और उन्हें छोड़ दीजिए !"

एक छोकरे के मुँह से ऐसी बात सुन कर सब लोग अचरज में डूब गए। "लड़के ! तू कौन है ?" राजा ने उससे पूछा।

"हुजूर ! मैं अभागे वाङ्ग का बेटा हूँ। हम चार भाई हैं। मैं ही सब से बड़ा हूँ । मेरे मरने पर भी माँ के तीन लड़के बचे रहेंगे। इसलिए उसे उतनी तकलीफ़ न होगी। लेकिन अगर मेरे पिता मर गए तो मेरे घरवालों के लिए जिन्दगी बिताना

मुश्किल हो जाएगा।" उस लड़के ने कहा ! ये बातें सुन कर राजा का अचरज और भी बढ़ गया। उसने पूछा-"बेटा ! तुम अपनी माँ के भेजने से आए हो या अपने मन से आए हो ?" "हुजूरं! मैं अपनी माँ से कह कर नहीं आया हूँ। लेकिन वह मुझसे नाखुश नहीं होगी। मेरे पिता के जीने से वह बहुत खुश होगी। हाँ, मेरे मरने से उसे रञ्ज जरूर होगा। लेकिन धीरे धीरे वह भूल जाएगी। यही सोच कर मैं खुद यहाँ चला आया।" उस लड़के ने जवाब दिया।

उसकी बातें सुन कर राजा का हृदय पिघल गया। "बेटा! मैंने तुम्हारी विनती मान ली।" उसने कहा।

यह सुनते ही उस लड़के ने खुशी से उछल कर राजा को बार बार प्रणाम किया और कहा-"हुजूर ! इस कृपा के लिए मैं जन्म जन्म कृतज्ञ रहूँगा। अब देरी क्यों ? पिताजी को छोड़ दीजिए और उनके बदले मुझे फाँसी पर चढ़ा दीजिए !"

यह सुन कर राजा की आँखों से आँसू बहने लगे। उसने कहा-"पगले कहीं के ! जब 'मैंने कहा कि मैंने तुम्हारी विनती मान ली' तो इसका मतलब यह नहीं था कि मैं तुम्हारे पिता के बदले तुम्हारी जान लेने जा रहा हूँ। तेरे जैसा लड़का जुग-जुग जीने योग्य है। वह कैसा पापी होगा जो तुम्हारा बाल भी बाँका करेगा ? तुझे जन्म देकर तेरे माता-पिता भी धन्य हो गए हैं। इसलिए मैंने उसे भी माफ कर दिया है, जाओ। हुएन को उसके पापों का दण्ड भगवान ने ही दे दिया है।" यह कह कर उसने तुरन्त वाङ्ग को कैद से छुटकारा दिलाया।

CHANDAMAMA (HINDI) MARCH 1952 REGD. NO. M. 5452

रङ्गीन चित्र - कथा चित्र – २